दशम खण्ड

दक्षिणेश्वर-मन्दिर में भक्तों के संग श्रीरामकृष्ण

प्रथम परिच्छेद

(संन्यासी सञ्चय नहीं करेगा— ठाकुर 'मद्गत-अन्तरात्मा')

ठाकुर श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर-काली-मन्दिर में हैं। वे अपने कमरे में छोटी खाट पर पूर्वास्य बैठे हैं। भक्तगण फर्श के ऊपर बैठे हैं। आज कार्त्तिक मास की कृष्णा सप्तमी, 25 कार्त्तिक, अंग्रेज़ी 9 नवम्बर, 1884 ईसवी।

प्राय: दोपहर का समय। मास्टर ने आकर देखा, भक्तगण क्रमश: आ रहे हैं। श्रीयुक्त विजयकृष्ण गोस्वामी के संग कई-एक ब्राह्मभक्त आए हैं। पुजारी राम चक्रवर्ती भी हैं। क्रमश: महिमाचरण, नारायण, किशोरी आ गए। तनिक पीछे और भी कई भक्त आए।

शीत का प्रारम्भ है। ठाकुर को कुरते की जरूरत थी। मास्टर को लाने के लिए कहा था। वे लट्ठे के कुरते के अतिरिक्त एक जीन का कुरता भी लाए थे, किन्तु ठाकुर ने जीन का कुरता लाने के लिए नहीं कहा था।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— तुम वरन् एक ले जाओ। तुम ही पहनना। इसमें दोष नहीं है। अच्छा, तुम्हें किस प्रकार के कुरते को लाने के लिए कहा था?

मास्टर— जी, आप ने साधारण-से कुरते की बात कही थी। जीन का कुरता

लाने के लिए नहीं कहा था।

श्रीरामकृष्ण— तो फिर वह जीन वाला ही वापस ले जाओ।

(विजय आदि के प्रति)— ''देखो, द्वारिकाबाबू ने बनात दी थी। फिर मारवाड़ी जन भी ले आए। मैंने नहीं ली— (ठाकुर और भी कहने वाले थे। तब विजय बातें करने लगे।)

विजय— जी, वही तो है। जो प्रयोजनीय है, वही लेना चाहिए। किसी को तो देनी ही पड़ेगी। मनुष्य के अतिरिक्त और कौन देगा?

श्रीरामकृष्ण— देने वाला वही है, ईश्वर! सास ने कहा, आहा बहू, सब की ही सेवा करने के लिए आदमी हैं, तुम्हारे भी कोई पाँव दबा देता तो अच्छा होता। बहू बोली, अजी! मेरे पाँव हरि दबाएँगे। मुझे किसी की जरूरत नहीं। उसने भक्ति-भाव से वह बात कही थी।

''कोई फकीर अकबर बादशाह के पास कुछ रुपया लेने गया था। बादशाह तब नमाज पढ़ रहा था, और कह रहा था, 'हे खुदा! मुझे धन दो, दौलत दो।' फकीर तब वापस आने लगा। किन्तु बादशाह अकबर ने उसको बैठने का इशारा किया। नमाज के पश्चात् पूछा, 'तुम क्यों चले जा रहे थे?' वह बोला, 'आप ही कह रहे थे— धन दो, दौलत दो।' तभी सोचा, यदि माँगना ही है, तो भिखारी से क्यों, खुदा से माँगूँगा!''

विजय— गया में साधु देखा था, अपनी चेष्टा नहीं। एक दिन भक्तों को खिलाने की इच्छा हुई। देखता हूँ, कहाँ से खूब सारा मैदा, घी आ गया। फल आदि भी आए।

(सञ्चय और तीन श्रेणी के साधु)

श्रीरामकृष्ण *(विजय आदि के प्रति)*— साधु की तीन श्रेणियाँ हैं— उत्तम, मध्यम, अधम। उत्तम, जो खाने के लिए चेष्टा नहीं करते। मध्यम और अधम होते हैं जैसे दण्डी-वण्डी। मध्यम 'नमो नारायण' कह कर खड़े रहते हैं। जो अधम हैं, उन्हें न दें, तो वे झगड़ा करते हैं। *(सबका हास्य)*।

''उत्तम श्रेणी के साधु की अजगर-वृत्ति होती है। उन्हें बैठे हुए ही

खाना मिलता है। अजगर हिलता नहीं। एक छोकरा साधु— बाल ब्रह्मचारी, भिक्षा करने गया। एक लड़की ने आकर भिक्षा दी। उसकी छाती पर उठे हुए स्तन देखकर साधु ने समझा छाती पर फोड़ा हो गया है। तभी पूछा। फिर घर की औरतों ने समझा दिया कि उसके गर्भ से बच्चा होगा, तब ईश्वर स्तन से दूध देंगे। तभी ईश्वर पहले से ही उसका बन्दोबस्त कर रहे हैं। यह बात सुनकर वह छोकरा साधु तो अवाक् रह गया! तब वह बोला, 'तब तो फिर मुझे भिक्षा करने का प्रयोजन नहीं, मेरे लिए भी आहार है'।''

कोई-कोई भक्त सोचते हैं कि तब तो हम भी चेष्टा न करें तो चलेगा।

श्रीरामकृष्ण— जिसके मन में है कि चेष्टा आवश्यक है, उसको चेष्टा करनी ही पड़ेगी।

विजय— भक्तमाल में एक सुन्दर कहानी है।

श्रीरामकृष्ण— तुम बताओ ना!

विजय— आप ही बताइए ना!

श्रीरामकृष्ण— नहीं, तुम्हीं कहो। मुझे इतनी याद नहीं। पहले-पहले सुनना चाहिए। इसीलिए पहले-पहले यह सब सुना करता था।

(ठाकुर की अवस्था— एक राम-चिन्तन— पूर्णज्ञान और प्रेम का लक्षण)

श्रीरामकृष्ण— मेरी अब वह अवस्था नहीं है। हनुमान ने कहा था, मैं तिथि-नक्षत्र नहीं जानता, एक राम-चिन्तन करता हूँ।

''चातक चाहता है केवल निर्मल जल। प्यास से प्राण जाय-जाय, किन्तु ऊँचा होकर (मुख ऊँचा किए वह) आकाश का (आकाश की बूँदों का) जलपान करना चाहता है। गंगा-जमुना, सात समुद्र जल से पूर्ण हैं। वह किन्तु पृथ्वी का जल नहीं पिएगा।

''राम-लक्ष्मण पम्पा सरोवर पर गए थे। लक्ष्मण ने देखा, एक कौवा व्याकुल होकर बार-बार जल पीने जाता है, किन्तु पीता नहीं है। राम से पूछने पर वे बोले, ''भाई! यह कौवा परम भक्त है। रात-दिन 'राम-राम-जप' कर रहा है। इधर प्यास से छाती फटी जा रही है, किन्तु जल नहीं पी पा रहा।

सोचता है, पीने लगा तो फिर 'राम-नाम-जप' रह जाएगा। हलधारी को पूर्णिमा के दिन मैंने कहा, दादा! आज क्या अमावस्या है? *(सब का हास्य)*।

''*(सहास्य)* अजी,! सुना था, जब अमावस्या-पूर्णिमा में भूल हो जाती है, तब पूर्णज्ञान होता है। हलधारी उस पर विश्वास क्यों करता? हलधारी बोला, यह है कलिकाल! इसे (ठाकुर को) फिर लोग मान देते हैं, जिसे अमावस्या-पूर्णिमा-बोध भी नहीं है।''

ठाकुर यह बात कह रहे हैं, तभी महिमाचरण आ गए।

श्रीरामकृष्ण *(सादर)*— आइये,आइये! बैठिए!

(विजय आदि भक्तों के प्रति)— ''ऐसी अवस्था में 'अमुक दिन' याद नहीं रहता। उस दिन वेणीपाल के बागान में उत्सव था, दिन भूल हो गया। 'अमुक दिन संक्रान्ति है, अच्छी तरह से हरि-नाम करूँगा'— ऐसी बातें निश्चित नहीं रहतीं। (कुछ क्षण सोचकर) किन्तु 'अमुक आएगा' कहने पर याद रहता है।''

(श्रीरामकृष्ण का मन-प्राण कहाँ— ईश्वर-लाभ और उद्दीपन)

''ईश्वर में सोलह आना मन जाने पर यह अवस्था होती है। राम ने पूछा, 'हनुमान, तुम सीता का सन्देश लाए हो। उसे कैसा देखा, मुझे बताओ।' हनुमान बोले, 'राम! देखा सीता का केवल शरीर पड़ा हुआ है। उसके भीतर मन-प्राण नहीं हैं। सीता ने मन-प्राण जो तुम्हारे पादपद्मों में समर्पण कर दिया है। जभी केवल शरीर पड़ा हुआ है। और काल (यम) आना-जाना कर रहा है। किन्तु क्या करे? केवल शरीर है, मन-प्राण उसमें नहीं हैं।'

''जिसकी चिन्ता करता है, उसी की सत्ता मिलती है। रात-दिन ईश्वर-चिन्तन करने से ईश्वर की सत्ता-लाभ होती है। नमक का पुतला समुद्र मापने के लिए गया, वही हो गया।

''पुस्तक अथवा शास्त्र का क्या उद्देश्य?— ईश्वर-लाभ। साधु की पोथी को किसी ने खोलकर देखा, प्रत्येक पन्ने पर केवल 'राम' लिखा हुआ,

और कुछ भी नहीं।

''ईश्वर के ऊपर प्यार आ जाने पर तनिक से ही उद्दीपन होता है। तब एक बार 'राम-नाम' करने से करोड़ों सन्ध्याओं का फल होता है।

''मेघ देखने से मोर को उद्दीपन होता है, आनन्द से पंख फैलाकर नृत्य करता है। श्रीमती को भी उसी प्रकार हुआ करता था। मेघ देखते ही कृष्ण की स्मृति मन में आ जाती।

''चैतन्य महाप्रभु मेड़ गाँव के पास से जा रहे थे। सुना, इस गाँव की मिट्टी से खोल (एक वाद्य यन्त्र) तैयार होते हैं। तुरन्त भाव में विह्वल हो उठे, क्योंकि हरि-नाम-कीर्त्तन के समय खोल बजता है।

''किसे उद्दीपन होता है? जिसकी विषयबुद्धि का त्याग हो गया है। विषयरस जिसका सूख जाता है, उसका थोड़े से ही उद्दीपन हो जाता है। दियासलाई भीगी होने पर हज़ार घिसो, नहीं जलेगी। उसका जल यदि सूख जाता है, तो ज़रा घिसने से ही दप् करके जल उठती है।''

(ईश्वर-लाभ के पश्चात् दुःख में, मरण में स्थिरबुद्धि और आत्म-समर्पण)

''देह का सुख-दुःख तो है ही। जिसका ईश्वर-लाभ हो गया है, वह मन, प्राण, देह, आत्मा— समस्त उनको समर्पण कर देता है। पम्पा सरोवर पर स्नान के समय राम-लक्ष्मण ने सरोवर के निकट धरती में धनुष खोंस (घुसा) कर रख दिया। स्नान के पश्चात् लक्ष्मण ने उठकर देखा कि धनुष रक्ताक्त (खून से लतपथ) हुआ है। राम देखकर बोले, 'भाई, देखो-देखो, लगता है किसी जीव की हिंसा हो गई है।' लक्ष्मण ने मिट्टी खोदकर देखा, 'एक बड़ा मेंढ़क है। मुमूर्षू अवस्था है।' राम करुण स्वर से कहने लगे, 'क्यों तुमने शब्द नहीं किया? हम तुम्हें बचाने की चेष्टा करते! जब साँप पकड़ता है तब तो खूब चीत्कार करते हो।' मेंढ़क बोला, 'राम! जब साँप पकड़ता है तब मैं यह बोलकर चीत्कार करता हूँ— 'राम रक्षा करो, राम रक्षा करो।' अब देख रहा हूँ राम ही मुझे मार रहे हैं। जभी चुप किए हुए हूँ'।''

द्वितीय परिच्छेद

(स्वस्वरूप में कैसे रहना ? ज्ञानयोग क्यों कठिन ?)

ठाकुर थोड़ा चुप रहे। महिमा आदि भक्तों को देख रहे हैं।

ठाकुर ने सुना है कि महिमाचरण गुरु नहीं मानते। अब ठाकुर फिर और बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— गुरु-वाक्य पर विश्वास करना उचित। गुरु के चरित्र की ओर देखने की आवश्यकता नहीं। 'यद्यपि आमार गुरु शुंडी बाड़ी जाय, तथापि आमार गुरु नित्यानन्द राय।' (यद्यपि मेरा गुरु शराबखाने में जाता है, तथापि मेरा गुरु नित्यानन्द राय है।)

''कोई चण्डी-भागवत सुनाता था। उसने कहा, 'झाड़ू अस्पृश्य तो चाहे है किन्तु स्थान को शुद्ध करता है'।''

महिमाचरण वेदान्त-चर्चा किया करते हैं। उद्देश्य है ब्रह्मज्ञान। ज्ञानी का पथ पकड़ा है और सर्वदा विचार करते हैं।

श्रीरामकृष्ण *(महिमा के प्रति)*— ज्ञानी का उद्देश्य है स्वस्वरूप को जानना। इसी का नाम है ज्ञान, इसी का नाम है मुक्ति। परब्रह्म— यह ही है निज का स्वरूप। 'मैं और परब्रह्म एक'— माया का कारण (आवरण) जानने नहीं देता।

''हरीश से कहा था, और कुछ नहीं है, सोने के ऊपर कुछ टोकरे मिट्टी पड़ी हुई है, उस मिट्टी को हटा देना, बस।

''भक्तगण 'मैं' रखते हैं, ज्ञानी नहीं रखते। किस प्रकार स्वस्वरूप में रहा जाता है— न्यांग्टा (नागा तोतापुरी) उपदेश देता था— मन का बुद्धि में लय करो, बुद्धि का आत्मा में लय करो। तभी स्वस्वरूप में रहोगे।

''किन्तु 'मैं' रहेगा ही रहेगा, जाता नहीं। जैसे अनन्त जल-राशि, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे, दाहिने-बायें, जल से परिपूर्ण! उसी जल के बीच एक जलपूर्ण कुम्भ है। भीतर बाहर जल, किन्तु तब भी कुम्भ भी है— 'मैं' रूप कुम्भ।

(पूर्वकथा— कालीबाड़ी में वज्रपात— ब्रह्मज्ञानी का शरीर और चरित्र)

''ज्ञानी का शरीर जैसे का तैसा ही रहता है, किन्तु ज्ञानाग्नि से काम आदि रिपु दग्ध हो जाते हैं। कालीबाड़ी में काफी दिन पहले आँधी-तूफान-वर्षा होकर फिर काली-मन्दिर में वज्रपात हुआ था। हम ने जाकर देखा था, दरवाजों को कुछ नहीं हुआ, किन्तु स्क्रुओं के सिर टूट गए थे। कपाट (दरवाजे) जैसे शरीर, काम आदि की आसक्तियाँ जैसे स्क्रु-समूह।

''ज्ञानी केवल ईश्वर की बात पसन्द करता है। विषय की बातें होने पर उसे बड़ा कष्ट होता है। विषयीगण और तरह के लोग होते हैं। उनकी अविद्या-पगड़ी नहीं खिसकती। तभी घूम-फिरकर उन्हीं विषय की बातों को ले आते हैं।

''वेद में सप्त भूमि की बात है। पञ्चम भूमि में जब चढ़ जाता है तब ईश्वर-कथा के अतिरिक्त कुछ भी सुन नहीं सकता, और बोल भी नहीं सकता। तब मुख से केवल ज्ञान-उपदेश निकलता है।''

इन समस्त बातों में क्या श्रीरामकृष्ण अपनी अवस्था का वर्णन कर रहे हैं? ठाकुर फिर और कहते हैं—

''वेद में है 'सच्चिदानन्द ब्रह्म'। ब्रह्म एक भी नहीं, दो भी नहीं। एक-दो के मध्य। अस्ति भी कहा नहीं जाता, नास्ति भी कहा नहीं जाता। किन्तु अस्ति-नास्ति के मध्य।''

(श्रीरामकृष्ण और भक्तियोग— रागभक्ति होने पर ईश्वर-लाभ)

श्रीरामकृष्ण— रागभक्ति आने पर, अर्थात् ईश्वर में प्यार आ जाने पर ही तब उन्हें प्राप्त किया जाता है। वैधीभक्ति होने में जैसी, जाने में भी वैसी। इतना जप, इतना ध्यान, इतना याग-यज्ञ-होम करेगा, इन-इन उपचारों से पूजा करेगा, पूजा के समय यह-यह मन्त्र-पाठ करेगा— इन सब का नाम है वैधीभक्ति। होने में जैसी, जाने में भी वैसी! कितने लोग कहते हैं, 'अरे भाई, कितना हविष्य किया है! कितनी बार घर में पूजा लाया हूँ! किन्तु क्या हुआ?'

''किन्तु रागभक्ति का पतन नहीं। किनकी रागभक्ति होती है?— जिनका पूर्वजन्म में बहुत कुछ किया हुआ होता है, अथवा जो हैं नित्यसिद्ध। जैसे एक भग्न घर में वन-जंगल काटते-काटते नल वाला एक फव्वारा मिल गया! मिट्टी, सुरखी आदि से ढका हुआ था। उन्हें हटा देने पर तुरन्त फर्-फर् करके जल निकलने लग गया!

''जिनकी रागभक्ति है, वे ऐसी बात नहीं कहते, 'भाई, कितना हविष्य किया है, किन्तु क्या हुआ?' जो नई-नई खेती करते हैं, उनके यदि फसल न हो तो जमीन छोड़ देते हैं। किन्तु खानदानी किसान फसल हो या न हो, फिर दोबारा खेती करेगा ही। उनके बाप-दादा किसानी करते आए हैं। वे जानते हैं कि खेती करके ही खाना होगा।

''जिन की रागभक्ति है, उनकी ही आन्तरिक होती है। ईश्वर उनका भार लेते हैं। हस्पताल में नाम लिखवा लेने से आराम बिना हुए डॉक्टर छोड़ता नहीं।

''ईश्वर जिन्हें पकड़े हुए हैं, उन्हें कोई भय नहीं। मैदान की मेंढ़ के ऊपर चलते-चलते जो लड़का बाप को पकड़े रहता है, वह पकड़ने पर भी गिर जाता है— यदि वह अन्यमनस्क होकर हाथ छोड़ दे। किन्तु बाप जिस लड़के को पकड़े रहता है, वह नहीं गिरता।''

(रागभक्ति होने पर केवल ईश्वर-कथा— संसार-त्याग और गृहस्थ)

''विश्वास से क्या नहीं हो सकता? जिसका ठीक (विश्वास) है, उसका उन सब में विश्वास होता है— साकार-निराकार, राम, कृष्ण, भगवती।

''उस देश में जाते समय रास्ते में वर्षा-तूफान आया। मैदान के बीच में तो फिर डाकुओं का भी भय होता है। तब सब ही कहने लगा— राम, कृष्ण, भगवती। और फिर बोला, हनुमान! अच्छा, सब कुछ कहने लगा— इसका क्या मतलब?

''यह कैसे है, जानते हो? जब नौकर वा दासी पैसे लेकर बाजार

जाता है, तब कह-कह कर लेता है यह आलू के पैसे, ये बैंगन के पैसे, ये मछली के पैसे। सब अलग-अलग हिसाब करके लेकर तब फिर मिला देता है।

''ईश्वर के ऊपर प्यार हो जाने पर केवल उनकी ही बातें कहने की इच्छा होती है। जो जिसको प्यार करता है, वह उसकी बातें सुनने और बोलने लगता है।

''संसारी लोगों को लड़के की बातें कहते-कहते उनके मुँह में लार टपकती है। यदि कोई लड़के की सुख्याति करता है तो झट कहेगा, ओ रे! अपने चाचा के लिए पाँव धोने के लिए जल ला।

''जो अमरूद पसन्द करते हैं, उनके निकट अमरूद की सुख्याति करने पर वे बड़े खुश होते हैं। यदि कोई अमरूद की निन्दा करे तो शायद कह उठेगा, तेरे बाप के चौदह पुरुषों ने क्या कभी अमरूद की फसल की है?''

ठाकुर महिमाचरण से ऐसा कह रहे हैं क्योंकि महिमा संसारी हैं।

श्रीरामकृष्ण *(महिमा के प्रति)*— संसार का एकदम त्याग करने की क्या जरूरत है? आसक्ति जाने से ही हुआ। किन्तु साधना चाहिए। इन्द्रियों के साथ युद्ध करना पड़ता है।

''किले के भीतर रहकर ही युद्ध करने में और भी सुविधा है। किले से अनेक सहायता मिल जाती है। संसार (गृह) भोग का स्थान है, एक-एक वस्तु को भोग करके तुरन्त त्याग करना होता है। मेरी साध थी, सोने की करधनी (गोट) पहनूँ। बाद में वह मिल भी गई, सोने की करधनी पहनी। किन्तु पहनने के पश्चात् तत्क्षण खोलनी होगी।

''प्याज खा लिया और विचार करने लगा— मन! इसका नाम है प्याज। फिर मुख में एक बार इधर-उधर, एक बार सब तरफ करके फिर फेंक दिया।''

तृतीय परिच्छेद

(संकीर्त्तनानन्द में)

आज एक गायक आएँगे, सम्प्रदाय-मण्डली लेकर कीर्त्तन करेंगे।

ठाकुर श्रीरामकृष्ण बीच-बीच में भक्तों से पूछते हैं, ''कहाँ, कीर्त्तन कहाँ है?''

महिमा— हम लोग अच्छे हैं।

श्रीरामकृष्ण— नहीं जी, ऐसा तो हमारा बारह मास रहता है।

नेपथ्य में कोई कहता है, '' 'कीर्त्तन' आ गया है। 'कीर्त्तन' आ गया है?''

श्रीरामकृष्ण आनन्द में भर कर बोले, ''कहाँ आया?''

कमरे के दक्षिण-पूर्व वाले लम्बे बरामदे में मादुर (चटाई) बिछा दी गई। श्रीरामकृष्ण कहते हैं, ''थोड़ा-सा गंगाजल दो, कितने विषयी लोगों ने पाँव दिए हैं!''

बाली-निवासी प्यारी बाबू की स्त्री और लड़कियाँ काली-मन्दिर-दर्शन करने आई हैं। कीर्त्तन होने की तैयारी देखकर उनकी सुनने की इच्छा हुई। एक जन आकर ठाकुर से कहते हैं, ''वे पूछती हैं कि क्या कमरे में जगह होगी, क्या वे बैठ सकतीं हैं?'' ठाकुर कीर्त्तन सुनते-सुनते ही कहते हैं, ''ना-ना''। (अर्थात् कमरे में) जगह कहाँ?

ठीक इसी समय नारायण आ उपस्थित हुए और ठाकुर को प्रणाम किया।

ठाकुर बोले, ''तू क्यों आया, इतना मारा तेरे घर के लोगों ने!'' नारायण ठाकुर के कमरे की ओर जा रहे हैं— देखकर ठाकुर ने बाबूराम से इशारा किया, ''उसे खाने के लिए दे दो।''

नारायण कमरे में गए। हठात् ठाकुर ने उठकर कमरे में प्रवेश किया। नारायण को अपने हाथ से खिलाएँगे। खिलाने के पश्चात् फिर दोबारा आकर कीर्त्तन के स्थान पर बैठ गए।

चतुर्थ परिच्छेद

भक्तों के साथ संकीर्त्तनानन्द में

बहुत-से भक्त आए हैं। श्रीयुक्त विजय गोस्वामी, महिमाचरण, नारायण, अधर, मास्टर, छोटे गोपाल इत्यादि। राखाल, बलराम अब श्री वृन्दावन-धाम में हैं।

समय— 3-4 बज गए हैं। ठाकुर श्रीरामकृष्ण बरामदे में कीर्त्तन सुन रहे हैं। पास आकर नारायण बैठ गए। और-और भक्तगण चारों ओर बैठे हुए हैं।

अब अधर आ उपस्थित हुए। अधर को देख कर ठाकुर जैसे उन्मत्त-से हो गए। अधर के प्रणाम करके आसन ग्रहण कर लेने पर ठाकुर ने उनको और भी निकट बैठने का इशारा किया।

कीर्त्तनीये ने कीर्त्तन समाप्त किया। सभा भंग हुई। भक्तगण बाग में इधर-उधर टहलते हैं। कोई-कोई माँ काली के और श्री राधाकान्त के मन्दिर में आरती-दर्शन करने गए।

सन्ध्या के पश्चात् ठाकुर के कमरे में फिर भक्तगण आ गए।

ठाकुर के कमरे में फिर दोबारा कीर्त्तन की तैयारी हो रही है। ठाकुर को खूब उत्साह है, कह रहे हैं, ''इधर एक बत्ती रखो।'' डबल बत्ती जलाने से खूब प्रकाश हो गया।

ठाकुर ने विजय से कहा, ''तुम ऐसे स्थान पर क्यों बैठे हो? इधर को सरक कर बैठो।''

अब संकीर्त्तन में खूब अच्छा जोश आ गया। ठाकुर मतवाले होकर नृत्य करते हैं। भक्तगण उन्हें अच्छी तरह से घेर कर नाच रहे हैं। विजय नृत्य करते-करते दिगम्बर हो गए हैं, होश नहीं है।

कीर्त्तनान्ते विजय चाबी खोज रहे हैं, कहीं गिर गई है। ठाकुर कह रहे हैं, एखाने एकटा हरिबोल खाय। (यहाँ पर एक हरिबोल-ध्वनि खाती है)— यह कहकर हँस रहे हैं। विजय को और भी कहते हैं, ''वह सब फिर क्यों!'' (अर्थात् चाबी के संग में फिर और क्यों सम्पर्क रखना!)

किशोरी प्रणाम करके विदा लेते हैं। ठाकुर ने जैसे स्नेह से आर्द्र (तर) होकर उनकी छाती (वक्ष) पर हाथ दिया और कहा, ''तबे एसो।'' (तो फिर आना)। बातें जैसे करुणा से भरपूर हैं। कुछ क्षण पश्चात् मणि और गोपाल ने निकट आकर प्रणाम किया, वे विदा लेंगे। और फिर वही स्नेह भरी वाणी। बातों से मानो मधु झर रहा है। कहते हैं, ''कल प्रातः उठकर चले जाना, फिर और हिम (सर्दी) न लग जाए!''

(भक्तसंग— भक्त-कथा-प्रसंग में)

मणि और गोपाल का फिर जाना नहीं हुआ, वे आज रात को रहेंगे। वे तथा और भी 2-1 जन भक्त फर्श पर बैठे हैं। कुछ क्षण पश्चात् ठाकुर श्रीयुक्त राम चक्रवर्ती से कहते हैं, ''राम, यहाँ पर जो और एक पापोश (पायदान) था, वह कहाँ गया?''

ठाकुर को सारे दिन अवसर नहीं मिला, तनिक-सा भी विश्राम नहीं कर पाए। भक्तों को छोड़कर कहाँ जाएँ! अब एक बार बाहर जा रहे हैं। कमरे में लौटकर देखा कि मणि रामलाल से सुनकर गाना लिख रहे हैं—

''तारो तारिणी!
एबार त्वरित करिये तपन-तनय त्रासे त्रासित''— इत्यादि।
[अब तारो शीघ्र माँ,
हे तारिणी, तपन-तनय (यमराज) के भय से बहुत त्रसित हूँ, (मैं)।]

ठाकुर मणि से पूछ रहे हैं, ''क्या लिख रहे हो?'' गाने की बात सुनकर कहते हैं, ''यह तो बड़ा भारी गाना है।''

ठाकुर रात को थोड़ी-सी सूजी की पायस (खीर) और एक या दो लुचि (पूरी) खाते हैं। ठाकुर रामलाल से कह रहे हैं, ''सूजी है क्या?''

एक दो लाइनें लिख कर मणि ने गाना लिखना बन्द कर दिया।

ठाकुर धरती पर आसन पर बैठ कर सूजी खा रहे हैं।

ठाकुर फिर दोबारा छोटी खाट पर बैठ गए। मास्टर खाट के पास रखे हुए पापोष (पायदान) के ऊपर बैठे हुए श्री ठाकुर के साथ बातें कर रहे हैं। ठाकुर नारायण की बातें करते-करते भावयुक्त हो रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण— आज नारायण को देखा!

मास्टर— जी हाँ, आँखें गीली! मुख देखकर रोना आया।

श्रीरामकृष्ण— उसको देखकर जैसे वात्सल्य होता है। यहाँ पर आता है— इस कारण उसे घर में मारते हैं। उसका तरफदार कोई नहीं है। 'कुब्जा तोमाय कु बुझाय। राइ पक्षे बुझाय एमन केउ नाई।'

(कुब्जा तुम्हें कौन बुझाए, समझाए? राधा की तरफ से कोई समझाए, ऐसा कोई नहीं है।)

मास्टर *(सहास्य)*— हरिपद के घर पुस्तकें रख कर पलायन।

श्रीरामकृष्ण— यह तो ठीक नहीं किया।

ठाकुर चुप रहे। कुछ क्षणों के पश्चात् फिर बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— देखो, उसकी बड़ी सत्ता है। वह न होता तो कीर्त्तन सुनते-सुनते मेरा छोड़ना! मुझे कमरे के भीतर आना पड़ा। (मेरा) कीर्त्तन छोड़कर आना— ऐसा कभी भी नहीं हुआ।

ठाकुर चुप हैं। कुछ क्षण पश्चात् बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— उससे भाव में पूछा था। तो एक बात मुझे बोला— मैं आनन्द में हूँ। *(मास्टर के प्रति)* तुम उसको कुछ खरीद कर कभी-कभी खिलाना— वात्सल्य-भाव में।

ठाकुर श्रीरामकृष्ण तेजचन्द्र की बात कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— एक बार उससे पूछ कर देखना। वह मेरे विषय में एक ही बार में (एकदम) क्या कहता है! 'ज्ञानी' या कुछ और? सुना था, तेजचन्द्र ऐसी बड़ी-बड़ी बातें नहीं कहता।

(गोपाल के प्रति)— देखो, तेजचन्द्र को शनि-मंगलवार को आने के लिए कहना।

ठाकुर फर्श पर आसन के ऊपर बैठे हैं। सूजी खा रहे हैं। पास ही दीवट पर प्रदीप जल रहा है। ठाकुर के पास मास्टर बैठे हैं। ठाकुर कह रहे हैं, ''कोई मिठाई है क्या?'' मास्टर नए गुड़ के सन्देश लाए थे। रामलाल से कहा, सन्देश ताक (shelf- फट्टे) के ऊपर हैं।

श्रीरामकृष्ण— कहाँ है? ला ना!

मास्टर व्यस्त होकर (घबराकर) ताक पर खोजने लगे। देखा, वहाँ सन्देश नहीं हैं। लगता है भक्तों की सेवा में खरच हो गए हैं। अप्रस्तुत (हैरान, हक्के-बक्के) होकर ठाकुर के निकट लौट कर बैठ गए। ठाकुर बातें करते हैं।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, एक बार यदि तुम्हारे स्कूल में जाकर देखूँ!

मास्टर समझे, इन्हें नारायण से स्कूल में जाकर मिलने की इच्छा है।

मास्टर— हमारे घर जाकर बैठने से हो जाएगा।

श्रीरामकृष्ण— नहीं, एक और विशेष भाव है। क्या है, जानते हो? वहाँ पर और कोई छोकरा है कि नहीं, एक बार देखता।

मास्टर— आप अवश्य जाएँ। और लोग देखने जाते हैं, उसी प्रकार आप भी जाना।

ठाकुर आहार के पश्चात् छोटी खाट पर जाकर बैठ गए हैं। किसी भक्त ने चिलम (तम्बाकू) तैयार कर दी। ठाकुर तम्बाकू पीते हैं। इसी बीच मास्टर और गोपाल ने बरामदे में बैठ कर रोटी और दाल इत्यादि का आहार (जलपान) किया। वे लोग नहबत में सोएँगे— निश्चय किया।

खाने के पश्चात् मास्टर खाट के पास वाले पाँवपोष पर बैठ गए।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— नहबत में यदि हाँड़िकुँडि (सामान) पड़ा हो तो यहाँ पर सो जाना, इसी कमरे में।

मास्टर— जो आज्ञा।

पञ्चम परिच्छेद

(सेवक के संग)

रात के साढ़े दस-ग्यारह हो गए हैं। ठाकुर छोटी खाट पर तकिये का ठेसा लगा कर विश्राम कर रहे हैं। मणि धरती पर बैठे हैं। मणि के साथ ठाकुर

बातें कर रहे हैं। कमरे की दीवाल के निकट उसी दीवट पर प्रदीप में आलोक जल रहा है।

ठाकुर अहेतुक कृपासिन्धु हैं। मणि की सेवा लेंगे।

श्रीरामकृष्ण— देख, मेरे पैरों में दर्द है। तनिक हाथ फेर दो तो!

मणि ठाकुर के चरणों में छोटी खाट के ऊपर बैठ गए और अंक में उनके दोनों पैर लेकर आहिस्ते-आहिस्ते हाथ फेर रहे हैं। ठाकुर बीच-बीच में बातें कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— आज सब कैसी बातें हुईं?

मणि— जी, खूब भली।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— अकबर बादशाह की कैसी बात हुई?

मणि— जी हाँ।

श्रीरामकृष्ण— क्या बात? बोलो, देखूँ!

मणि— एक फकीर अकबर बादशाह से मिलने गए थे। अकबर तब नमाज पढ़ रहे थे। नमाज पढ़ते-पढ़ते ईश्वर से धन-दौलत माँग रहे थे। तब फकीर धीरे-धीरे उस कमरे से जाने लगे। फिर अकबर के पूछने पर वे बोले, 'यदि भिक्षा करनी है तो भिखारी से क्यों करूँ?'

श्रीरामकृष्ण— और क्या-क्या बातें हुई थीं?

मणि— सञ्चय की बातें खूब हुई थीं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— क्या-क्या हुईं?

मणि— जब तक चेष्टा करने का बोध रहता है तब तक चेष्टा करनी चाहिए। सञ्चय की बात सींती में कैसी हुई थी!

श्रीरामकृष्ण— क्या बात?

मणि— जो उनके ऊपर पूरा निर्भर करता है, उसका भार वे लेते हैं। नाबालिग का जैसे वली (guardian) सब भार ले लेता है। और एक बात सुनी थी कि निमन्त्रण वाले घर में छोटा लड़का साथ बैठने की जगह नहीं ले सकता। उसको खाने के लिए कोई और बिठा देता है।

श्रीरामकृष्ण— ना! यह ठीक नहीं हुआ। बाप के द्वारा लड़के का हाथ पकड़

कर ले जाने पर फिर वह लड़का नहीं गिरता।

मणि— और आज आप ने तीन प्रकार के साधुओं की बात कही थी। उत्तम साधु को बैठे हुए ही भोजन मिलता है। आप ने उस छोकरे साधु की कहानी कही, जिसने लड़की के स्तन देख कर कहा था, छाती पर फोड़े क्यों हुए हैं? और भी बहुत-सी अद्‌भुत बातें कहीं। सब की सब अन्तिम बातें हैं।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— क्या-क्या बातें?

मणि— वही पम्पा के कव्वे की कथा। राम-नाम का रात-दिन जप कर रहा है, तभी जल के निकट जाता है किन्तु पी नहीं पाता। और उस साधु की पोथी की बात। उसमें केवल 'ॐ राम'— बस यही लिखा हुआ था। और हनुमान ने राम से जो कहा!

श्रीरामकृष्ण— क्या कहा?

मणि— सीता को देखकर आया हूँ— केवल देह ही पड़ी हुई है, मन-प्राण समस्त तुम्हारे चरणों में समर्पण किया हुआ है।

''और चातक की बात— स्वच्छ जल (स्वाति नक्षत्र का जल) के अतिरिक्त और कुछ नहीं पिएगा।

''और ज्ञानयोग और भक्तियोग की बात।''

श्रीरामकृष्ण— क्या?

मणि— जब तक कुम्भ-ज्ञान है, तब तक 'मैं'-कुम्भ रहेगा ही रहेगा। जब तक 'मैं' ज्ञान है, तब तक 'मैं भक्त, तुम भगवान' है।

श्रीरामकृष्ण— ना, कुम्भ-ज्ञान रहे व ना रहे, कुम्भ जाता नहीं। 'मैं' जाने वाला नहीं। हजार विचार करो, वह नहीं जाएगा।

मणि तनिक देर चुप रहे। फिर दोबारा कहते हैं—

मणि— कालीबाड़ी में ईशान मुखर्जी के साथ बातें हुई थीं। बड़े भाग्य से तब मैं वहाँ पर था और सुन पाया था।

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— हाँ, क्या-क्या बात हुई थी? बोलो तो, सुनूँ ज़रा!

मणि— वही बताया था, कर्म-काण्ड। आदि काण्ड। शम्भुमल्लिक से कहा

था, यदि ईश्वर तुम्हारे सामने आएँ तो क्या फिर तुम कुछ हस्पताल, डिस्पेन्सरियाँ माँगोगे?

"और भी एक विशेष बात हुई थी— जब तक कर्म में आसक्ति रहती है, तब तक ईश्वर दिखाई नहीं देते। केशवसेन से वह बात कही थी।"

श्रीरामकृष्ण— क्या?

मणि— जब तक बच्चा चूसनी लेकर भूला रहता है तब तक माँ खाना-वाना पका लेती है। चूसनी फेंक कर जब चीत्कार करता है, तब माँ भात का पतीला नीचे उतार कर बच्चे के पास जाती है।

"और भी एक बात उसी दिन हुई थी। लक्ष्मण ने पूछा था, 'भगवान के कहाँ-कहाँ पर दर्शन हो सकते हैं।' राम ने बहुत-सी बातें बता कर फिर कहा— भाई, जिस मनुष्य में ऊर्जिता भक्ति दिखाई देगी— 'हँसता, रोता, नाचता, गाता, प्रेम में मतवाला होगा'— वहाँ पर समझोगे मैं (भगवान्) हूँ।"

श्रीरामकृष्ण— आहा! आहा!

ठाकुर कुछ क्षण चुप किए रहे!

मणि— ईशान से केवल निवृत्ति की बातें कहीं। उस दिन से बहुतों को अक्ल हुई है। कर्त्तव्य-कर्म कम करने की ओर झुके हैं। कहा था— 'लंका में रावण मर गया, बेहुला रो-रोकर आकुल हो गई।'

ठाकुर श्रीरामकृष्ण ने यह बात सुनकर उच्च हास्य किया।

मणि *(अति विनीत भाव में)*— अच्छा जी, कर्त्तव्य-कर्म— हंगामा— कम करना तो अच्छा है?

श्रीरामकृष्ण— हाँ, किन्तु कोई सम्मुख आ पड़े तो वह और बात है। साधु या गरीब व्यक्ति सम्मुख आ जाए तब उनकी सेवा करना उचित है।

मणि— और उस दिन ईशान मुखर्जी के खुशामदियों की बात तो सुन्दर कही। लाश के ऊपर जैसे गिद्ध पड़ता है (मड़ार ऊपर जेमन गिद्ध पड़े)। यह बात आप ने पण्डित पद्मलोचन से कही थी।

श्रीरामकृष्ण— ना, 'उलोर बामनदास'— उलो के बामनदास से।

कुछ क्षण पश्चात् मणि छोटी खाट के पास पायदान पर बैठ गए।

ठाकुर को तंद्रा आ रही है। उन्होंने मणि से कहा, तुम जाओ लेटो। गोपाल कहाँ गया? तुम दरवाजा बन्द रखना।

अगले दिन सोमवार है। श्रीरामकृष्ण बिछौने से अति भोर में उठ गए हैं और देवी-देवताओं के नाम कर रहे हैं। बीच-बीच में गंगा-दर्शन कर रहे हैं। इधर माँ काली के और श्री श्री राधाकान्त के मन्दिर में 'मंगलारती' हो रही है। मणि ठाकुर के कमरे में धरती पर सोए थे। वे भी शय्या से उठकर सब दर्शन कर रहे हैं और सुन रहे हैं।

प्रात:कृत्य करने के उपरान्त वे ठाकुर के पास आकर बैठ गए।

ठाकुर ने आज स्नान किया। स्नानान्ते श्री काली-मन्दिर में जा रहे हैं। मणि संग में हैं। ठाकुर ने उन्हें कमरे में ताला लगाने के लिए कहा।

काली-मन्दिर में जाकर ठाकुर आसन पर बैठ गए और फूल लेकर कभी अपने मस्तक पर, कभी माँ काली के पादपद्मों में दे रहे हैं। एक बार चँवर लेकर डुलाया। और फिर अपने कमरे में लौट आए। मणि को फिर चाबी से खोलने के लिए कहा। कमरे में प्रवेश करके छोटी खाट पर बैठ गए। अब भाव में विभोर— ठाकुर नाम कर रहे हैं। मणि पृथ्वी पर अकेले बैठे हैं।

अब ठाकुर गाना गा रहे हैं। भाव में मतवाले होकर गाने के बहाने क्या मणि को सिखा रहे हैं कि काली ही ब्रह्म है। काली निर्गुणा और फिर सगुणा— अरूप और फिर अनन्तरूपिणी।

गाना— के जाने काली केमन?
षड़दर्शने ना पाय दर्शन॥ (पूरा गाना व अर्थ पृष्ठ 18-19 पर है।)

गाना— ए सब क्षेपा मेयेर खेला।
(जार मायाय त्रिभुवन विभोला) (मागीर आप्तभावे गुप्तलीला)
से जे आपनि क्षेपा, कर्त्ता क्षेपा, क्षेपा दुटा चेला॥
कि रूप कि गुण भंगी, कि भाव किछुइ जाय न बोला।
जार नाम जपिये कपाल पोड़े कण्ठे विषेर ज्वाला॥

सगुणे निर्गुणे बांधिए विवाद, ढयाला दिये भाँगछे ढयाला।
मागी सकल विषये समान राजी नाराज केवल काजेर वेला॥
प्रसाद बोले थाको बोसे भवार्णवे भासिये भेला।
जखन आसबे जोयार उजिये जाबे, भाँटिये जाबे भाँटार बेला॥

[भावार्थ— यह सम्पूर्ण पगली माँ का खेल है। (जिस की माया में त्रिभुवन भूला हुआ है), (स्त्री की अभ्रान्त गुप्त लीला है, यह सब।) वह स्वयं पगली है, मालिक पगला है और उसके दोनों चेले पागल हैं। क्या रूप, क्या गुण और क्या रंग-ढंग हैं, क्या भाव है, कुछ भी नहीं कहा जाता। जिनका नाम जपने से शिवजी का कपाल जल रहा है और कण्ठ में विष की ज्वाला है, सगुण और निर्गुण में विवाद लगा कर जो ढेले से ढेला तोड़ती है, यह स्त्री सब विषयों में प्रसन्न रहती है परन्तु केवल काम के समय नाराज हो जाती है। प्रसाद कहते हैं भाव-समुद्र में जीवनतरी को तैरा कर बैठे रहो। जब ज्वार आएगी तो यह ऊपर चली जाएगी और भाटे के समय नीचे चली आएगी।]

गाना— काली के जाने तोमाय मा (तुमि अनन्तरूपिणी)!
तुमि महाविद्या, अनादि, अनाद्या, भवबन्धेर-बन्धन हारिणी तारिणी!
गिरिजा, गोपजा, गोबिन्दमोहिनी, शारदे वरदे नगेन्द्रनन्दिनी,
ज्ञानदे, मोक्षदे, कामाख्या कामदे, श्रीराधा श्रीकृष्णहृदि विलासिनी!

[अर्थ— हे काली, तुम्हें कौन जान सकता है? तुम अनन्तरूपिणी हो। तुम महाविद्या हो, अनादि, अनाद्या हो और भव-बन्धन को काटने वाली हो। तुम शिवानी हो, गोपजा हो तथा गोविन्द का मन मोहने वाली हो। तुम ज्ञान देने वाली, मोक्ष देने वाली, कामनाओं को पूर्ण करने वाली और श्री कृष्ण के हृदय में विलास करने वाली श्री राधा हो। हे नगेन्द्रनन्दिनी, शारदे! हमें वर दो।]

गाना— तारो तारिणी! एबार त्वरित करिये,
तपन-तनय-त्रासे त्रासित प्राण जाय।
जगत अम्बे, जनपालिनी, जन-मोहिनी, जगत जननी,
यशोदा जठरे जन्म लोइये, सहाय हरि लीलाय॥
वृन्दावने राधाविनोदिनी, ब्रजवल्लभ विहारकारिणी,
रासरंगिनी रसमयी होये, रास करिले लीलाप्रकाश॥
गिरिजा, गोपजा, गोविन्द मोहिनी, तुमि मा गंगा गतिदायिनी,
गान्धार्विके गौरवरणी गाओये गोलके गुण तोमार॥

शिवे, सनातनी, सर्वाणी ईशानी, सदानन्दमयी, सर्वस्वरूपिणी
सगुणा, निर्गुणा, सदाशिव प्रिया, के जाने महिमा तोमार॥

[अर्थ— हे तारिणी, मुझे इस बार जल्दी तारो। यमराज के डर से मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। हे जगदम्बे, लोकपालिनी, जनमोहिनी, जग-जननी, तुमने यशोदा के गर्भ से जन्म लेकर कृष्णलीला में सहायता की थी। तुम वृन्दावन में विनोद करने वाली राधा थीं, व्रजवल्लभ कृष्ण के साथ विहार करने वाली थीं। रासरङ्गिणी और रसमयी होकर तुमने रास रचकर अपनी लीला प्रकाशित की थी। तुम शिवानी हो, गोपजा हो, तुम गोविन्द-मोहिनी हो, तुम गतिदायिनी गंगा हो, तुम गौरवर्णी हो, गन्धर्वजन इस संसार में तुम्हारा गुणगान करते हैं। माँ! तुम कल्याणदायिनी हो, तुम सनातनी हो, ईशानी हो, सदानन्दमयी हो, सर्वस्वरूपिणी हो, सगुणा हो, निर्गुणा हो, सदा शिव को प्रिय हो, तुम्हारी महिमा कौन जान सकता है?]

मणि मन-मन में कह रहे हैं यदि ठाकुर एक बार यह गाना गाएँ—

'आर भुलाले भुलबो ना मा, देखेछि तोमार रांगाचरण।'

कैसा आश्चर्य! मन में आते ही आते यह गाना भी गा रहे हैं। (तुम्हारे लाल चरण देख लिए हैं। अब कितना ही आप भुलाएँ, मैं नहीं भूलूँगा।)

कुछ देर बाद ठाकुर पूछते हैं—

अच्छा, मेरी अब किस प्रकार की अवस्था तुम्हें बोध होती है!

मणि *(सहास्य)*— आपकी है सहजावस्था।

ठाकुर ने अपने-आप ही गाने की स्थायी पकड़ ली—

''सहज मानुष ना होले सहजके ना जाय चेना।''
(मनुष्य स्वयं सहज बने बिना सहज को पहचान नहीं पाता।)